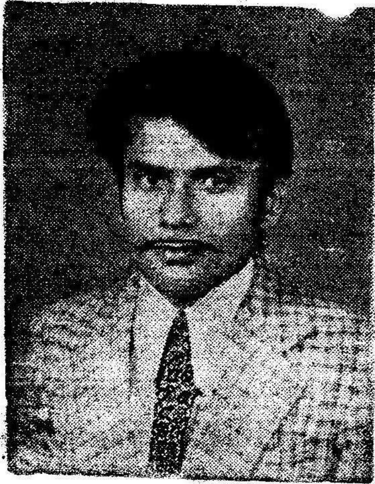
आशीर्वचन



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'
बी० एस-सी० (कृषि)
ग्राम+पो०—शम्भुआर
जिला—मधुबनी

गत वर्ष लहेरियासरायक 'संकल्प-लोक' द्वारा आयोजित समारोहमे (एम० एल० एकेडमीमे) सांस्कृतिक कार्यक्रममे किछु गीत हमरा विशेष रूपसँ आकृष्ट कैलक। दूटा गायक मिलिकऽ युगलगान करैत रहथि। ज्ञात भेल जे हुनक नाम शशिकान्त-सुधाकान्त छैन्ह जे अपन एकटा 'टीम' बनौने छथि आ लोक-गीतक युगलगान करैत छथि।

एक-दूटा गीत विशेष रूपसँ श्रोताक मनोरंजन केलकैन्ह जेना 'फगुआ आएल फगुआ गेल.......' 'तोरा अंगनामे वसन्त नेने आएब सजना.....'। हमरा प्रसन्नता भेल जे एहन-एहन लोकप्रिय गीतसँ मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे और अधिक वृद्धि हैत आ जन-मन-रंजन होयत।

आइ एक नवयुवक जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल' हमरासँ भेंट करए अएलाह आ हुनकासँ ई जानि हमरा बहुत हर्ष भेल जे ओहि सभ गीतक रचयिता यैह छथि। एतबे नहि, आर बहुत रास गीतक रचना केने छथि जे 'तोरा अङनामे' नामसँ पुस्तकाकार छपि रहल छैन्ह।

हमरा विश्वास अछि जे ई सभ गीत आङन-आङनमे पसरि जैत आ सांस्कृतिक समारोहमे खूब जमत।

हमर शुभकामना जे अनिल जी एहीं प्रकारेँ अधिकसँ अधिक रचना द्वारा मैथिलीक गीत-साहित्यक श्रीवृद्धि करैत रहथि आ ओकर मधुर गायन मंचपर मुखरित भय आबालवृद्धवनितासँ आनन्द प्रदान करैत रहय।

हरिमोहन झा
१३-११-७८

तोरा अङनामे



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल"

TORA ANGNA ME

(Maithili-Geet)

By

Jagdish Chandra Thakur 'Anil'

पहिल संस्करण
नवम्बर १९७८

मूल्य : **तीन टाका मात्र**

प्रकाशक :
डा० हेमचन्द्र लाल कर्ण
चतरा (मधुबनी)

मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस
पटना-८००००६

गीति-काव्य आ 'अनिल'जी

आधुनिक युगमे गीत शब्दकेँ लऽ बड़ भ्रम पसरल अछि। 'गीति' ओ 'गीत'केँ लोक एके अर्थमे लैत अछि। हमरा जनैत 'गीति' तँ अंगी थिक ओ 'गीत' ओकर अंग। तात्पर्य ई जे 'गीति-काव्य'क एक भेद मात्र थिक 'गीत'। 'गीति' अंग्रेजीक 'लिरिक' शब्दकेँ द्योतित करैत अछि आ 'गीत' अंग्रेजी शब्द 'सौंग'केँ। दोसर भ्रम अछि सब कविताकेँ 'गीति' मानि लेब।

गीति, काव्यक सर्वाधिक सुकोमल, आनन्ददायक ओ प्रिय स्वरूप थिक। व्यक्तिक आवेगपूर्ण भावनाक अत्यन्त स्वाभाविक ओ सरल अभिव्यक्ति होइत छैक गीतिमे। स्वानुभूति-निरूपिणी होइत अछि गीति काव्य, तेँ ई आवेगपूर्ण भावना व्यक्तिगतो भऽ सकैछ, धार्मिको, देशभक्तिपूर्णो अथवा आनो प्रकारक। यैहसब कारण अछि जे गीति-काव्यक रचना लेल भाव-गाम्भीर्य ओ तन्मयताक बेसी प्रयोजन होइत अछि। महत्त्वपूर्ण भावनाक प्रभावकारी अभिव्यक्ति आवश्यक छैक। भावानुकूल भाषा तँ चाहबे करी। आ, भाषाक श्रीवृद्धि करैत अछि शब्द। तेँ गंभीर भावात्मक अभिव्यक्तिक लेल जाहि भाषाक प्रयोग हो तकर शब्दो उपयुक्त स्थानपर श्रेष्ठ होयबाक चाही। संक्षेपमे ई कहल जा सकैत अछि जे कवि जखन भावावेशमय आत्मानुभूतिकेँ संतुलित शब्दक माध्यमसँ संगीतमय चित्रण करैत छथि तखन गीति-काव्य बनैत अछि। आ, अभिव्यक्तिक लघुता, मानवीय भावनाक अलंकृत व्यंजना एवं गतिशीलता गीति-काव्यक विशेषता होइत अछि।

गीतिक विकास लौकिक जीवनक अनुभूतिक आधारेपर भेल होयत, ई हमरालोकनिकेँ मानि लेबाक चाही। पावनि-तिहार ओ अन्य धार्मिक कृत्य कविक प्रेरणा-स्रोत रहल होयत। तेँ लोक-गीतसँ गीतिकाव्यक विकास भेल होयत। प्राचीन भारतीय भाषामे बहुतो गीत भेटैत अछि। नाट्य-शास्त्रक प्रणेता भरत मुनि सेहो गीतक महत्ताकेँ स्वीकार कयने छथि।

मैथिली गीति-काव्यक आरंभ 'चर्यापद'सँ मानल जाइत अछि। बादमे जयदेव, चण्डीदास, विद्यापति आदि एही पद-शैलीकेँ अपनौलनि। तत्कालीन समाजपर एहि शैलीक खूब प्रभाव पड़ल। विद्यापतिक परवर्ती कविलोकनि तँ गीति-काव्यक अमार लगा देलनि।

उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरण अबैत-अबैत विद्यपतिक परम्परासँ भिन्न गीति-काव्यक रचना होयब आरम्भ भेल। ओहिमे शिल्प, विषय, भाव ओ शैली—सब दृष्टिसँ परिवर्त्तन लक्षित होइत अछि। समयक बदलैत गति, नव परिवेश कथ्यमे सेहो परिवर्त्तन अनलक। स्वतंत्रता प्राप्तिक बादसँ एक दिस मैथिलीक गीति-काव्यमे नवीनतम प्रवृत्ति विशेष रूपसँ परिलक्षित होइत अछि, तँ दोसर दिस राजनीतिक स्वतंत्रताक संग-संग राजनीतिक कुटिलता, आर्थिक विषमता ओ संकटमय जीवनक निराशा, असंतोष, कुण्ठा आदि क्रमशः गीतिमे महत्त्वपूर्ण रूपसँ प्रस्फुटित होइत अछि।



की कतऽ ?

माँ शारदे !

माँ शारदे !
वर यैह दे
हम मङइत छी तोरा सँ ।
भारत मे
जनम-जनम जनमी
मिथिला माइक कोरा सँ ।। माँ शारदे......

अपन ज्ञान केर मधुर वारि
हम धरती पर बरिसाबी,
पाथरहु मे भरि दी हृदय आर
मृतको कें विहुँसि जिया दी,
हिय मे ओ सुधा भरि दे ।। माँ शारदे......

अनुपम अपन संस्कृति कें
हम दुनियाँ मे फैलाबी,
हृदयहीनता, द्वेष, कलह कें
दुनियाँ सँ बैलाबी,
कान मे ओ मन्त्र कहि दे ।। माँ शारदे......

सौंसे दुनियाँ मे सभकें
हम त्यागक मन्त्र सिखाबी,
आङन-आङन घर-घर बुलिकए
प्रेमक दीप जराबी,
दी ज्योति-कलश भरि दे ।। माँ शारदे......

दुनियाँ एके स्वर सँ गाबय
हिलि-मिलि विजयक गीत,
ग्रह-उपग्रह नक्षत्र आदि पर
[illegible] मानवक जीत,

जय माँ सन्तोषी

गहबर जे गेलौं
दुरगाथान जे गेलौं
काली सँ जे मङलौं
मैया दुरगा सँ मङलौं

दीयऽ मैया एको संतान हे
सुगना रे सुगना, रे सुगना।

थिर ने रहै छल दगधल छाती
केलहुँ कतेको कबुला-पाती
विभूत दिएलौं गोहारि करेलौं
ब्राह्मण खुएलौं कुमारि खुएलौं
धूमन चढ़ेलौं दीप जे जरेलौं
आँचर पसारि कोखिक भीख जे मङलौं

तइयो ने भेल कल्याण रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना ॥······

तोरा बिना अङना अन्हार लगै छल
सगरो जिनगी पहाड़ लगै छल
छठि पावनि पुजलौं चौठचन्द्र पुजलौं
दिनकर सँ जे मङलौं चौठी-चान सँ मङलौं
केरा घौड़ चढ़ेलौं खीर-पूरी जे चढ़ेलौं
कोशिया कबुललौं ढाकन कबुललौं

हमरा ले' सभ बनला अकान रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना ॥······

गेलौं शिवशंकरक शरण मे
लपटेलौं जा हुनके चरण मे
कुसेसर जे गेलौं विदेस्सर जे गेलौं
कपलेसर जे गेलौं भवानीपुर गेलौं
गौरी लग कनलौं महादेव लग कनलौं
फूल-बेलपात आ गंगाजल चढ़ेलौं

कियो नहि देलनि धियान रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना ॥······

कमलो नहेने किछु नै भेल
सिमरियो डूब देने कष्ट ने गेल
सभतरि सँ थकलौं तँ घर आबि बैसलौं
मोन मारि शुक्रक उपास तखन ठनलौं
धूप जे जरेलौं दीप से सजेलौं
खीर जे चढ़ेलौं गुड़-पूरी जे चढ़ेलौं
अठमा दिन पर मइया संतोषीजी के पुजलौं
पुजितहि-पुजितहि दस मास पुजलौं

तँ फेरि देलनि मइया धियान रे
सुगना रे सुगना, रे सुगना।
कह जय माँ संतोषी
जय जय माँ संतोषी ॥······

जुनि कान रे

जुनि कान जुनि कान जुनि कान रे
बौआ जुनि कान रे ।
नै तँ कौआ ल' जेतौ तोहर कान रे ॥ बौआ··

खा ले जल्दी, सूति रह चुप-चाप
नहि तँ भकौआँ धरतौ,
सुनहिन हे जंगल में गीदड़ बजै छै
टाङ पकड़ि ल' जेतौ

एतौ लकड़सुंघा थोकड़ी में कसि क'
नेने चल जेतौ अपन गाम रे ॥···

काल्हि अबैछै बौआ के बाबू
नेने कते बस्तुनमा
हमरा बौआ ले' अंगा-टोपी
रंग-विरंगक खेलौना

साइकिल के घंटी बौआ टुनटुन बजेतै
देखि जुड़ायत हमर प्राण रे ॥ ···

बुचिया रधिया बड़ बदमास'छि
बौआ हमर बुधियार
भोरे बौआक बाबा कें कहि क'
मङबा देबै कुसियार

काल्हि खन नानीक गाम सँ अबैछै
चङेरा भरल पूरी-पकवान रे ॥ ···

भोरे बौआ ले' भानस करबै
भात-दालि-तरकारी
बुचिया कें कनिओ नै देबै
बौआ कें भरि थारी

दुख केर ई राति बौआ बीतत अबस्से
असरा गरीबक भगवान रे ॥···

अइ माटि कें प्रणाम

बौआ दुनू हाथ जोड़ि करू
अइ माटि कें प्रणाम ।
ई देश थीक गांधीक
विद्यापति केर गाम ॥ बौआ···

सोनाक चिड़ै भारत
से दुनियाँ जनैए
आ तकर हृदय मिथिला
से के नै बुझैए
हम की कहब इतिहासे कहैत अछि
आएल छथि शंकर, लोभाएल छथि राम ॥ बौआ···

कािल्ह केर मिथिलाक
मण्डन अहीं
यौ वाचस्पति अहीं
यौ विद्यापति अहीं
आ कािल्ह केर भारतक
गांधी अहीं
यौ सुभाषो अहीं
यौ भगतसिंह अहीं
विश्व मे चमका सकी नाम अपन पूर्वजक
आशा करैए ई धरती ललाम ॥ बौआ···

पेट अपन कहुना तँ
कुकुरो भरैए
छि:-छि: ओ जीवन
जे अजगर जिबैए
मानव-समाज लेल
दम जे तोड़ैत अछि
सैह दुनियाँ मे
अमर भऽ जिबैए
थूकि दैछ दुनियाँ ओइ स्वार्थीक नाम पर
माटि केर नाम जे करैछ बदलाम ॥ बौआ···

पड़ल अछि अहींक लेल
काज एकटा
बनयबा लेʼ भारत मे
समाज एकटा
कािल्ह केर भारत मे चाही ई घोषणा—
ʻई धरती हो तकरे, चुआबय जे घामʼ ॥ बौआ···

देखि तोरा लगैए

देखि तोरा लगैए तहिना जेना
चान नभ सँ भूतल पर उतरि आएल हो ।
दिने मे हो पसरल श्यामल घटा
जैमे आभा तरेगनक छिड़ियैल हो ॥...

दए रहल अछि मूक निमंत्रण जेना
लाज सँ सकपकायलि पियासलि नयन ।
बुझि पड़ैए जेना स्नेह केर बाढ़ि मे
कपोलक द्वू सरोबर उमड़ि आएल हो ॥...

मधु बोरल अधर अछि छिड़िया रहल
दाड़िम केर दाना सनक तोर दसन ।
बुझि पड़ैए जेना साओन मास मे
कतौ अम्बर मे बिजुरी छिटकि आएल हो ॥...

पुलकित भ' उठैये एतय सभ डगर
तोर साँसक चलय मलयानिल जतय ।
बुझि पड़ैए जेना चन्दन-बन सँ
कस्तूरी वला मृग भटकि आएल हो ॥...

● ● ●

[[illegible]]

अहाँ नील गगन केर चन्दा

(युगल गीत)

—अहाँ नीलगगन केर चन्दा
हम मृत्युभुवनक चकोर ।
—हम विरहक राति अन्हरिया
पिया, अहाँ वसन्तक भोर ॥...

ई जादूगर
कतय सँ आयल
नयन लोभायल
निन्न बिलायल
मोनक चैन पड़ायल, सखि हे...

—दुनियाँ जकरा चोर कहय से
अनका कहइछ चोर ॥ अहाँ...

—की छल राजा
की छलि रानी
की छल सोना

[जगदीशचन्द्र ठाकुर]

पोथी मे ने भेटत दुल्हा
एहेन गियान
जिनगी भरि मे संगी एहेन
भेटत क्यो ने आन

लिखा दियनु हे ससुर-अङना मे ।

देखब दुलहा कहियो
ई संगी नहि छूटय
सासुरक बान्हल प्रेमक
डोरी ने ई टूटय

बन्हा दियनु हे ससुर-अङना मे ।

देलहुँ अमोल धन
राखब जोगाकए
बड़ पछतायब
एकरा गमाकए

बुझा दियनु हे ससुर-अङना मे ।

वर-कनियाँ होइए
एके गाड़ी के दू पहिया
हैत बड़ कचोट
बिसरबै ई जहिया

रटा दियनु हे ससुर-अङना मे ।

●●●

मोन होइए

मोन होइए अहाँ केँ देखिते रही ।
किछु बाजी अहाँ, हम सुनिते रही ॥...

आइ आयल मिलन केर
मधुर-यामिनी
बनि बैसलौं अहाँ
मानिनी-कामिनी

एक युग सन लगैए, एक-एक घड़ी ।
किछु बाजी अहाँ, हम सुनिते रही ॥

आइ आयल हृदय मे
आनन्दक लहरि
बात कहबाक जे छल
से गेलौं बिसरि

किछु फुरा ने रहल की करी ने करी ।
किछु बाजी अहाँ, हम सुनिते रही ॥

कोन जादू छी भरने
अपन दृष्टि मे
जे नहा गेलौं हम
स्नेह केर बृष्टि मे

आब मरजी अहीं केर अहीं जे करी ।
किछु बाजी अहाँ, हम सुनिते रही ॥

●●●

सभटा एक पिहानी, सखि हे···

—दुख-सुख जीवन मे अबिते अछि
जहिना साँझ आ भोर ।। अहाँ···

—प्रीति-डगर हम
छोड़ब कोना कऽ
छी माँछ, पानि बिनु
जियब कोना कऽ
जिवितहि मरब कोना कऽ, सखि हे···

हृदय-सिंधु मे रहि-रहि उठइछ
अहींक सुधिक हिलकोर ।। अहाँ···

—मिलनक आशा-सुमन
फुलायल
हृदय सिनेहक
घाट नहायल
अपुरुब प्रीति समायल सखि हे···
—हो-ऽ-ऽ अपुरुब प्रीति समायल

—मन उपवन मे नाचि रहल छी
जहिना नाचय मोर ।। अहाँ···



ससुर अङना मे

घुमा दियनु हे ससुर-अङना मे ।
नहूँ-नहूँ चलियौ दुल्हा
जोर सँ ने चलियौ
एखने सँ कनियाँ केर
हाथ ने छोड़ियौ

धरा दियनु हे ससुर-अङना मे ।
देखब दुलहा कहियो
हुए' ने गलती
अपने चलबै आगाँ
कनियाँ पाछाँ-पाछाँ चलती

सिखा दियनु हे ससुर-अङना मे ।

बाजू ओझाजी रामो-राम

जेल बना नित खेल करै छी
भेटत कोना सम्मान ?
बाजू ओझाजी रामो-राम ॥ ···

मात्र ससुरेक भरोसे अहाँके
जनमौलनि की बाप यौ
अपना घर मे पावनि-तिहारे
सुनै छी भेटय भात यौ
अइठाँ तुलसीफूल कें खुद्दी कहै छी
तरुआ कें कुकुरक कान ।
बाजू ओझाजी रामो-राम ॥ ···

लाजो ने होइए मुँह बजै छी
हमरा 'ई-ओ' चाही,
अछि बिकायल देहो अहाँकेर
बापो छथिए गबाही
कतेक बेर छी घूरल सभा सँ
तैपर एत्ते गुमान !
बाजू ओझाजी रामो-राम ॥ ···

मिथिला केर युवक की जानय
जोड़ब नेह-सिनेह
पाइक लोभें आँखि मूनि जे
बेचि लैत अछि देह
अबइछ बनि रावणो ससुर-गृह
कहतै कोना लोक राम ?
बाजू ओझाजी रामो-राम ॥ ···

लाज जँ हो तँ ठोर लियऽ सीबि
कान खोलि कऽ सूनू यौ
एक दोसरक अछि परिपूरक
नर आ नारी दूनू यौ,
सरिपहुँ शृंगार छथि पुरुष नारी केर
नारी सँ सृष्टिक विधान ।
बाजू ओझाजी रामो-राम ॥ ···

● ● ●

कक्का मारल गेला

कक्का मारल गेला
सौराठक मैदान मे ।
पहिले कन्यादान मे ॥

भरना रखलनि खेत-पथार
टाका गनलनि द'स हजार
तैपर द्व सोड़हि बरियाती
अयला बनि-बनि घोड़ा-हाथी

महिसो बेच' पड़लनि रसगुल्ला के दाम मे ।
बरियातीक सम्मान मे ॥

भेलखिन 'अप-टू-डेट' जमाइ
समधि से नमरो कसाइ
कोनो ठाँ हुए ने हिनाइ
सँठलनि खेतो बेचि [illegible]

तइयो रुसिए गेलथिन समधिन समधियान मे ।
कोबरघरक [illegible] मे ॥

तै पर दाही से धमसान
ने हेतनि एको चुटकी धान
छटपट-छटपट करनि परान
कथीपर जीतै सभ सन्तान

की करता ? माथ हाथ धए बैसल छथि खरिहान मे ।
जड़ाउरक ओरिआन मे ॥

समधियो पौलनि जतबा टाका
भेलनि रमन-चमन मे खरचा
नफ्फा बस एतबेटा भेलनि
समधिक घर उजाड़िक' छोड़लनि

सभटा टाका चलि गेल बनियाँ के दोकान मे ।
पूरी आ पकमान मे ॥

अछि तँ सभहक घर मे बेटी
सभक्यो मिलि एखनो जँ चेती
तखने मिथिला फेर चमकती
तखने मैथिलियो हँसि सकती
अत्यावश्यक अछि परिवर्तन

तिलक-विधान मे ।
सौराठक मैदान मे ॥



तिलक प्रथा कें बन्द करू

हे मिथिला केर भाग्य-विधाता, नारा आइ बुलन्द करू।
चाही जँ उद्धार मैथिलिक, तिलक-प्रथा कें बन्द करू॥

छथि उदासे बहिन मैथिली
आइ जागृतिक भोर मे
स्नेह ने पाबि रहलि बेचारी
अपनो माइक कोर मे
देखि मलिन आकृति निज जनकक
डूबल सदिखन नोर मे

हो पौरुष तँ एहि फन्दा सँ मिथिला कें स्वच्छन्द करू।
चाही जँ उद्धार मैथिलिक, तिलक-प्रथा कें बन्द करू॥

परिणय मे काटर केर परिचय
थीक परम व्यभिचार
अन्त होइछ की एहि व्यभिचारक
अछि जनइत संसार
दरकि रहल अछि छाती जननिक
देखि ई अत्याचार

प्रायश्चित करए समाज एहि पापक,
सभक्यो तकर प्रबन्ध करू।
चाही जँ उद्धार मैथिलिक, तिलक-प्रथा कें बन्द करू॥

भाषण आ आश्वासन दै छथि
बड़का-बड़का नेता,
विश्व-समाजक अभिनेता आ
नवयुग केर प्रणेता
फेकत थूक बहिन हुनका पर
जे नहि डेग बढ़ेता

करू दूर ई रोग समाजक, आब ने अधिक विलम्ब करू।
चाही जँ उद्धार मैथिलिक, तिलक-प्रथा कें बन्द करू॥

खेद जे हम मैथिल एखनो धरि
अपने घर मे हेरायल छी
कारण जे हम सभ एखनो धरि
बाट अपन भोतिआयल छी
तें ने अपने गाड़ल कल मे
हम दिन-राति पेरायल छी

विषम समस्या अपन समाजक,
सभक्यो मिलिकय अन्त करू।
चाही जँ उद्धार मैथिलिक, तिलक-प्रथा कें बन्द करू॥



चलि जो रे पाँती

चलि जो रे पाँती साजन केर गाम
कहियन्हु हुनका हम्मर प्रणाम।
मोन पाड़ि दीहनु सासुर के बाट-घाट
मोन पाड़ि दीहनु अभगलीक नाम ॥ ...

पुछिहनु हुनका जे रूसल किएक छथि
हमरा बिसरि चुप्प बैसल किएक छथि
पठौलनि ने मिसरी आ ने खटमिट्ठी
ने देलनि समाद आ ने लिखलनि चिट्ठी

की ने पड़ैनि मोन रातियो चतुर्थीक
की ने भेटै छनि लिफाफोक दाम ॥ ...

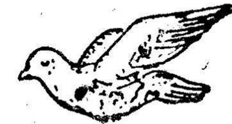
कहलनि अहाँ चान हम छी चकोरी
टूटत ने कहियो पीरीतिक ई डोरी
मोन मे आशाक गुड्डी उड़ौलनि
सङ-सङ कतेकें नव सपना सजौलनि

प्रेमक पथ पर दौड़ाय आब किए
पाछाँ घिचै छथि पकड़िकऽ लगाम ॥ ...

करइछ किलोल आइ आँखिक पिपासा
चूर-चूर भ' गेल मोनक बतासा
पाथर करेज कें तों पिघलबिहें
मिझा गेल बाती कें फेर सँ जरबिहें

कहिहनु बेकल छथि जंगल मे सीता
जल्दी सँ चलियौ औ अयोध्याक राम ॥ ...

●●●



ई जुनि बूझू

ई जुनि बूझू झूठ कहै छी।
कहिया दर्शन हैत अहाँ सँ
आङुर पर हम दिन गनै छी॥···

सासुर अयबाक होइत अछि इच्छा
मुदा चलैत अछि एखन परीक्षा

बीतत कोना ई मिलन-प्रतीक्षा
कखनो-कखनो खूब सोचै छी।
ई जुनि बूझू झूठ कहै छी॥···

हैत परीक्षा-फल जँ ने बढ़ियाँ
लोक कहत जे अभागलि कनियाँ

चुटकी लेत हमरा भरि दुनियाँ
मोन मारि तेँ एखन पढ़ै छी।
ई जुनि बूझू झूठ कहै छी॥···

जुनि बूझब जे अहाँके बिसरलौं
ककरहु माया-जाल मे फँसलौं

हम तँ अहाँकेर हाथ पकड़लौं
अहींकेर प्रेम-गगन मे उड़ै छी।
ई जुनि बूझू झूठ कहै छी॥···

बीतत परीक्षा शीघ्र आयब
तखन अपन हम कुशल सुनायब

अहाँ कथू ले' ने गाल फुलायब
चिट्ठी एखन बस, एतबे लिखै छी।
ई जुनि बूझू झूठ कहै छी॥···

● ● ●

आधा अंगक मालिक छी अहाँ

प्राणनाथ केर चरण-कमल मे सादर हमर प्रणाम
हम लीखि रहल छी लेटर ई अहाँ बूझब टेलीग्राम
पबितहिं चिट्ठी चलि देब अहाँ कनियोँ जँ हैब गियानी
नहि तँ ससरि जैत हाथ सँ मधुमय हमर जुआनी

आधा अंगक मालिक छी अहीं
तेँ दै छी इएह इशारा।
एहन बयस मे फेर ने कहियो
भेटब हम दोबारा॥ एहन वयस मे···

कतेक साओन आयल आ आबि कऽ चल गेल
कतेक बादरि आयल आ बरसि कऽ चल गेल

पियास नयन केर मिझा ने सकलौं
केलौं कते नेहोरा॥ एहन वयस मे···

सपनो नै कहियो दरस भेल आ हम चिहुकि रहि गेलौं
बीति चुकल कएटा वसन्त आ हम कुहुकि रहि गेलौं

कहू कते दिन जीबि सकब हम
रटइत प्रेम-पहाड़ा॥ एहन वयस मे····

तन केर सागर मे अबइत अछि अहाँक सुधिक हिलकोर जखन
विरह-वेदना भँवर बीच डुबि जाइछ आश केर डोर तखन

जीवन-नैया कोना क' पहुँचत
माँझी बिना किनारा॥ एहन वयस मे····

● ● ●

इ जुनि पूछू

ई जुनि पूछू अहाँ बिना
राति बितैए' हमर कोना ··

किछु बात मोन पड़ि आबय
मोनक पंछी उड़ि भागय
चैनक चिल्हका उठि कानय
कलबो कहने नहि मानय
लाखो थकनी रहइछ तैयोऽऽ
गाढ़ निन्न नहि आबयऽऽ

ई जुनि पूछू अहाँ बिना
राति बितैए' हमर कोना ···

किछु दर्द एहन सन होइए'
लिखितो जे लिखल ने जाइए'
कहितो जे कहल ने जाइए'
लेकिन जे सहल ने जाइए'
मजबूरी तँ अछि रहबा ले'ऽऽ
एसगर रहल ने जाइए'ऽऽ

ई जुनि पूछू अहाँ बिना
राति बितैए' हमर कोना ···

अछि आँखिक निन्न बिलायल
लगइछ किछु जेना हेरायल
मन विकल भेल औनायल
नोरे नयना भरि आयल
प्रिये ! अहाँकेर सुधिक लहरि मेऽऽ
जाइत छी भसिआयलऽऽ

ई जुनि पूछू अहाँ बिना
राति बितैए' हमर कोना ···



तोरा अङना मे

तोरा अङना मे

वसन्त नेने

आएब सजना । तोरा अङना मे…

पीयरे ओहार बिच लाले रंग डोलिया
ताही बिच कुहुकय प्राण कोइलिया

तोरे ले' पराती

सुनैब सजना ।। तोरा अङना मे…

आशक पातिल प्रेमक बाती
देखि जुड़ायत दगधल छाती

सजैब सजना ।। तोरा अङना मे…

सेज सजायब कल्पित उपवन
करब निछाउर तन-मन-यौवन

नीलगगन सन

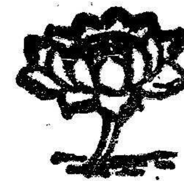
बनैब सजना ।। तोरा अङना मे…

नोर बहाकय थाकलि नयना
उछिलय सिनेहक गंगा-यमुना

सङे-सङे जी भरि

नहैब सजना ।। तोरा अङना मे…





अहाँ जँ ने अबितौं

सपनो मे कहियो ने सोचने होयब जे
अहाँकेर बिना हम कोना रहि सकै छी
मिलन केर तरंग हृदय मे उठै छल
प्रियतम ! अहाँकें कोना कहि सकै छी

हमर घर अन्हारक अन्हारे रहैत
अहाँ जँ ने अबितौं ! अहाँ जँ ने अबितौं !!

चंचल चितवन
सनक ई मनोरम
अहाँकेर हृदयकेर
उपवन ने रहितय
त' अहीं कहू
हे हमर प्राण प्रियतम
मोनक ई कोइली
कहाँ जा कुहुकितय

ई स्वप्नक वसन्त असारे रहैत
अहाँ जँ ने अबितौं ! अहाँ जँ ने अबितौं !!

दू मोनक ई हरियर
जँ धरतो ने रहितय
तँ कारी घटा ई
कहाँ जा बरसितय
अहाँकेर नोरक
जँ सागर ने बनितय
तँ उमतल नदी दू
कतऽ जाक' मिलितय

साओनो मे सुखारक सुखारे रहैत
अहाँ जँ ने अबितौं ! अहाँ जँ ने अबितौं !!

विरहक जँ ई तार
टूटल रहैत
त' जिनगीक वीणा
बजबितौं कोना
अधरे मे जँ भास
हेरायल रहैत
तँ संगीत-प्रेमक
सुनितौं कोना

ई शृंगारो बेकारक बेकारे रहैत
अहाँ जँ ने अबितौं ! अहाँ जँ ने अबितौं !!

आइ ने छोड़ब

भौजी
आइ ने छोड़ब,

आइ ने छोड़ब, भौजी
लेपब गाल मे लाल अबीर।
भैया जँ कतबो तमसेता
क' लेब कान बहीर ॥ भौजी...

फगुआ खेलथि श्री कृष्ण जी
गोपी सभहक संग।
मिथिला केर अछि फगुआ नामी
दियर-भाउज केर संग ॥ भौजी...

फगुआ मे होइते अछि अहिना
व्यर्थ करै छी लाज।
आजुक दिन रहिते अछि सभठाँ
दियर-भाउज केर राज ॥ भौजी...

नवकी भौजी पावि अहाँ सन
हम सभ भेलौं नेहाल।
बरख दिन केर बाद ई अवसर
आओत फरुकें साल ॥ भौजी...

भौजी केहनो हो लजबिज्जी
हम सभ आइ ने छोड़ी।
दियर-भाउज केर बीच होइछ
ई पावनि प्रेमक डोरी ॥ भौजी...

● ● ●

हम मुग्ध भेलौं

हम मुग्ध भेलौं
धरतीक श्रृंगार देखि कऽ
नव कलश नव मज्जर
आ पात देखि कऽ

बुझि पड़ैछ आबि गेल नव दुनियाँ जेना।
आइ धरतीयो लगैछ नव कनियाँ जेना ॥...

थाकि गेलाह चलिते
वसन्त सन कहार
पीरे महफा सँ भैलीह
कनियाँ बहार

पहिने हमहूँ खेली फगुआ
आब मात्र खेली धुरखेल ।। मोटका-मोटका...

पहिने पढ़लौं 'क्या और कहाँ' मे
सोना-चानिक कत्तऽ खान
आब जनै छी कत्तऽ कत्तऽ
सरकारी कोटाक दोकान

पहिने खेली खेल ताश केर
आब खेलै छी कर्मक खेल ।। मोटका-मोटका...

पहिने छल डिगरीक सेहन्ता
आब अछि नोकरीकेर चिन्ता
खेतोसभ अछि पड़ि गेल भरना
बिका गेलनि कनिआ केर गहना

हम छगुन्ता मे पड़ले छी
हे परमेश्वर ई की भेल ?? मोटका-मोटका...

पहिने विपत्ति पड़ै तँ लोकक
मदति करैत छला भगवान
आब कतबो हर-हर बम-बम कहू
देथि ने शिवशंकरजी ध्यान

आइ कृष्ण गोवर्द्धनधारीक
चक्र-सुदर्शन कत्तऽ गेल ?? मोटका-मोटका...

वर आ कनियाँ

वर आ कनियाँ केलनि झगड़ा ।
के बुझबौ छै मतलब ककरा ?

थीक हमर ई कर्मक दोष ।
सासु-ससुर सभ भेटल निशोख ।।

छथि कंजूस अहाँकेर बाप ।
मोन होइए' जे दियनि सराप ।।

नीक जकाँ हमरा ठकि लेलनि।
गछि कए सभटा किछु नै देलनि॥

●

अहींक माय-बाबू की केलनि ?
नीक एको टा भार ने सँठलनि॥

●

दस हजार टाका गनबौलनि।
पाइ एको टा खर्च ने केलनि॥

●

नहि जुड़लनि एको टा गहना।
लूझि लेलौं देलो मुँहबजना॥

●

हमरा ले' अहीं की केलौं।
जरल कपार जे अइ घर एलौं॥

●

से कहि कनियाँ लगली कानऽ।
क्रोधेँ वऽरो लगला फानऽ॥

●

कनियाँ भरि मोन खेलनि मारि।
वऽरो जी भरि सुनलनि गारि॥

●

सुनु अय कनियाँ सुनु यौ वर।
एनाक' कतेक दिन चलत ई घर ?

● ● ●

से फगुआ खेलायत कोना कऽ…

छै जेबी जकर खाली-खाली
आ खरची घरक लटपटायल
से फगुआ खेलायत कोना कऽ
जकरा आङन वसन्त नहि आयल…

बीस बरखक तपस्या तँ कैलक तखन
भेटलैक बड़कीटा डिगरी
से दर-दर के ठोकर खेलक मुदा
नहि भेटलैक एकोटा नोकरी

जकर स्वप्नक महल ढहि गेलै
छै आशा-कमल मुरझायल।

आइ भमरो लगैत अछि नचनियाँ जेना।
आइ सगरो बजैछ हरमुनियाँ जेना ॥...

सूतलि कली छलि
से जागि उठली
ई हुलि-मालि देखि कऽ
नाचि उठली

आइ उमतल चलैत अछि हावा जेना।
नेने फूल-पात दूभि-धान-लावा जेना ॥...

आकाश सन कोबर
निहारि लियऽ मित्र
देखू चन्द्रमाक लीखल
तरेगनक चित्र
कालिह रातियो लगैत छल
काल-राति सन
आइ दिनो लगैत अछि
सोहाग-राति सन

आइ कोइलियो लगैछ अहिवाती जेना।
जे भूमि क' गबैत हो पराती जेना ॥

किछु नै भेल

मोटका-मोटका पोथी पढ़लौं
पोथी केर सभ पन्ना रटलौं
से सभ रटि क' किछु नै भेल।
पहिने जोड़ी जोड़ दशमलव
आब जोड़ै छी नून आ तेल ॥ मोटका-मोटका...

कनिञे बढ़लौ तँ बूझऽ लगलौं
की थिक भाषण की थिक शासन
आब तँ भरि दिन इएह बुझै छी
की थिक बासन की थिक रासन

पहिने हाथ रुमाल रहै छल
आब हाथ मे झोरी लेल ॥ मोटका-मोटका...

पहिने मोन रहय जीहे पर
कहिया कतऽ कथीक चुनाव
आब तँ भरि दिन मोन रहैए
चाउर-दालि-आँटा केर भाव

पहिने हाथ मे कलम रहै छल
आब हाथ 'छओनमरी' लेल ॥ मोटका-मोटका...

पहिने रहय प्रबल जिज्ञासा
के छथि कोन दलक लीडर
आब करै छी कोशिश चीन्हक
के छथि मुखिया के डीलर

देखू ई दुध-कट्टू बच्चा
आँखि धसल छै पेट चभच्चा
आओत ई जहिये दुनियाँ मे
गारि अहाँके देत ई पक्का
भरि नै सकतै पेट कोनहुना
कतऽ सँ भेटतै दूध-दही ?...

नहि चिन्ता केर कोनो प्रयोजन
करा लियऽ परिवार-नियोजन
जतबे अछि ततबे ले' चाही
समुचित शिक्षा समुचित भोजन
पीड़ित परिवारक भारें छथि
काँपि रहल भारतक मही ...

माङि रहल अछि देश अहाँ सँ
स्वस्थ सुखी संतान
तखने होयत परिवारक संग
भरि देशक कल्याण
अछि कर्त्तव्य पुनीत अहाँ ले'
चाहे अपने जेना करी ?...



फगुआ चलिए गेल

फगुआ आएल
फगुआ गेल
फगुआ चलिए गेल।
फगुआ खेलै ले'
मोन लगले रहि गेल ॥...

करेजा के सप्पत द' क'
ओकरा लिखलिऐ
दुइयो दिन के खातिर एतऽ
अबै ले' कहलिऐ
ओकरा पर
मोन टङले रहि गेल ॥...

ढोल बाजल डंफा बाजल
होइ छल गर्द
एम्हर हमरा होइत रहल
मीठ-मीठ दर्द
सऽख-सेहन्ता
जरले रहि गेल ॥...

जरल छल कपार तँ
हम कोना हँसितौं
ननदि आ दीयऽर संगे
खेलबे किए' करितौं
रंग-अबीर
पड़ले रहि गेल ॥...

से डंफा बजाओत कोना कऽ
जकरा आङन वसन्त नहि आयल ···

द' आयल कते ठाम औना-पथारी
ने भेटलैक पैंचे ने भेटलै उधारी
ने घरमे छै चुटकी भरि मड़ुओ खेसारी
की करतैक भानस से चिन्ता छै भारी
[शोकाकुल कनैत छैक गृहणी बेचारी
कतऽ छह बैसल हौ कृष्ण-मुरारी ?]

जकरा सोझाँ मे नेना कनै छै
'माँ, की खैब भूख अछि लागल ?'

से पूआ पकाओत कोना कऽ
जकरा आङन वसन्त नहि आयल ···

नूआ छै गुदरी आ धोती छै फाटल
बौआक अंगा पर चिप्पी छै साटल
बाँचल छै जकरा घरे-घरारी
से कीनत कोना नव धोती आ साड़ी

जकरा रहबा ले' एकटा मड़ैया
आ' मड़ैया सेहो ढनमनायल
से रंग उड़ायत कोना कऽ
जकरा आङन वसन्त नहि आयल ···



युग कहैत अछि

युग कहैत अछि, हम ने कही
अपना जिनगीक अहीं छी मालिक
चाहे अपने जेना रही ॥···

दू-तीन बाउ
सँ घर बसाउ
बेशी ले' मन
नै ललचाउ

अपने हाथ लगाम अहाँक अछि
चाहे अपने जेना उड़ी ॥...

छोट-छीन परिवार
अछि सुख केर आधार
बेशी धोया-पूता सँ लगाए
घर हो जेना बजार

स्वर्ग-नरक अपनेक हाथ अछि
चाहे अपने जतऽ रही ?...

देखू ई दुध-कट्टू बच्चा
आँखि धसल छै पेट चभच्चा
आओत ई जहिये दुनियाँ मे
गारि अहाँके देत ई पक्का
भरि नै सकतै पेट कोनहुना
कतऽ सँ भेटतै दूध-दही ?...

नहि चिन्ता केर कोनो प्रयोजन
करा लियऽ परिवार-नियोजन
जतबे अछि ततबे ले' चाही
समुचित शिक्षा समुचित भोजन
पीड़ित परिवारक भारें छथि
काँपि रहल भारतक मही ...

माङि रहल अछि देश अहाँ सँ
स्वस्थ सुखी संतान
तखने होयत परिवारक संग
भरि देशक कल्याण
अछि कर्त्तव्य पुनीत अहाँ ले'
चाहे अपने जेना करी ?...



फगुआ चलिए गेल

फगुआ आएल
फगुआ गेल
फगुआ चलिए गेल।
फगुआ खेलै ले'
मोन लगले रहि गेल॥...

करेजा के सप्पत द' क'
ओकरा लिखलिऐ
दुइयो दिन के खातिर एतऽ
अबै ले' कहलिऐ
ओकरा पर
मोन टङले रहि गेल॥...

ढोल बाजल डंफा बाजल
होइ छल गर्द
एम्हर हमरा होइत रहल
मीठ-मीठ दर्द
सऽख-सेहन्ता
जरले रहि गेल॥...

जरल छल कपार तँ
हम कोना हँसितौं
ननदि आ दीयऽर संगे
खेलबे किए' करितौं
रंग-अबीर
पड़ले रहि गेल॥...

मोन मारि रहि गेलौं
पीटैत कपार
पड़ले रहलौं भरि दिन
बन्द क' केबार
तै ले' अर्र-दर्र बुढ़िया
बजिते रहि गेल ।।...

केहेन होइ छै फगुआ
से हम ने बुझलिऐ
भीजि गेलै गेड़ुआ
हम ततेक कनलिऐ
तै ले' ननदियो निरासी
खौंझबिते रहि गेल ।।...

आब एतै मनसा त'
बजबो ने करबै
कतेक मनौतै त'
एकेटा बात पुछबै
जे, 'एहन निशोख
ई किए' बनि गेल' ??...

● ● ●



कहने त' जाउ

बात कहलौं कते, ने बिगड़बै अहाँ
मुदा जाइते ने सभटा, बिसरबै अहाँ
से कहने त' जाउ फेर कहिया एबै
कहिया एबै ? ···

ओहू बेर कतेक हम केलौं नेहोरा
मुदा अहाँ पत्रोक ने देलौं उतारा
सेहन्ता हमर ने बुझलिऐ अहाँ
फगुओ सन के पावनि ने एलिऐ अहाँ
आश केर फूल सभ झहरि गेल छल
अहाँ बिना मोन तऽ हहरि गेल छल
हम कनलौं कते ने देखलिऐ अहाँ
गारि पढ़लौं कते ने सुनलिऐ अहाँ
से सप्पत हमर खाउ
आ कहने त' जाउ फेर कहिया एबै
कहिया एबै ? ···

बिना पुरुष के मौगीक जिनगी पहाड़
बड़ डेराओन लगैत अछि रातुक अन्हार
पाबि एसगर मे राति भरि कनैत रहि गेलौं
क' बोखार केर लाथ हम सहैत रहि गेलौं
एना करबै जँ फेर हम सहि ने सकब
कहि दै छी साफ-साफ चुप्प रहि ने सकब
आगि देह मे लगाय बुभू जरि जैब हम
ने तँ खा लेब माहुर आ मरि जैब हम

अहूँ ततबे मनाउ
ने, तँ कहने त' जाउ फेर जल्दी एबै
की नै एबै ? ····

ओना मोन मे त' कखनो कऽ होइए' उमंग
जे थोड़बो दिन ले' हमरो ल' चलितौं संग
अहूँ हमरो अछैते तँ कष्ट कटै छी
व्यर्थं होटल मे पाइ ओते नष्ट करै छी
हम कथू ले' अहाँके ने तंग करब
आर चाही की हमरा जँ संगे रहब
से ई अर्जी हमर आर मर्जी अहाँक

चलू जल्दी सुनाउ जे की करबै
संग लऽ चलबै
कि नै लऽ जेबै ? ····



सासु-पुतोहु मे

सासु-पुतोहु मे
भोरे-भोरे झगड़ा भेलै हे ।

बाजलि सासु उठू यै कनियाँ
आङन-घर बहारू
थारी-पीढ़ी धोउ-माँजू
आ' चिल्हका अपन सम्हारू
रौदक धाही आयल आङन
आबहु सीड़क टारू
कनियाँ आँच पजारू हे ॥

अइँठैत-जुइँठैत बाजलि कनियाँ
ई थिक कोन रेबाज
बुढ़िया बोरसि सेबनहि रहतै
कनियाँ करतै काज
हम उठब ई बैसले रहती
बड़बड़ाइत भरि काबू
हमहूँ पड़ले रहबै हे ॥ ····

बुढ़िया बाजलि हमरा सोझाँ
के कल्ला अलगाओत
मुसरी झा के बेटीऽ
हमरे पर आनि बघाड़त
हमरा पर जे आँखि गुड़ारत
तकरा सख ध' डाहब
छाउर लगा जीह घीचब हे ॥ ····

फाँड़ बान्हिक' बाजलि कनियाँ
आब ने एको सहबनि
मूँह सम्हारथु नै तँ
एकटा कहती दसटा कहबनि
अपना सयँ के हमहूँ दुलारू
हम कथी के सहबनि ?
हमहूँ सभ किछु कहबनि हे ॥ ····

सगर टोल दलमल्लित भऽ गेल
पसरल घोल-फचक्का
अऽढे-घाटे देखि रहल छल
चुगिला-चोर-उचक्का
दरबज्जा सँ दौड़ल आयल
बुढ़बा आर जुअनका
झगड़ा बढ़िए गेलै हे ॥ ····

बाप-बेटा निज लोकक खातिर
केलनि हल्ला-गुल्ला
पंच एला पंचैती कएलनि
कात करौलनि चुल्हा
बूढ़ी धेलनि महिसक छोहड़ि
कनिजा धेलनि चरखा
जुअनका मटकी मारै हे ॥ ····





बड़ा-बड़ा झंझटि छै...

यार, बड़ा-बड़ा झंझटि छै नोकरी मे ।
भाइ रे, बड़ा मजा भेटल बेकारी मे ॥...

सुतलौं त' सुतले छी
झंझटि सँ हटले छी
हाथ लेलौं 'नोभेल'
से बैसलौं त' बैसले छी
बजितथि की बाबू लाचारी मे ॥ भाइ रे...

चाहक दोकान हो
पानक दोकान हो
बस हो ट्रेन हो
होटल, सिनेमा हो
बीति गेल जीवन उधारी मे ॥ भाइ रे...

मारल ने माँछ, आ ने
उपछल हम खत्ता
फेकलनि क्यो छक्का
तँ मारि लेलौं सत्ता
गेलौं कहियो ने खेती-पथारी मे ॥ भाइ रे...

भेटल की नोकरी
भेलहुँ परतन्त्र हम
चलै छी भरि दिन
जेना कोनो यन्त्र हम
मोन भ' गेल बन्द आलमारी मे ॥ भाइ रे...

हमरा पर बूझू
उनटि गेल दुनियाँ
बिगड़ल छथि साहेब
आ, रुसलि छथि कनियाँ
मोन तङ अछि फाइल आर साड़ी मे ॥ भाइ रे...

खटलौं भरि मास
तँ भेटल दरमाहा
मोन पड़ल हुनकर
चिट्ठी लिखलाहा
भ' गेल सभ खरचा बिमारी मे ॥ भाइ रे...

बूझू तँ नोकरी
बड़का तपस्या अछि
सभकेँ प्रसन्न करब
बड़का समस्या अछि
दिन बितैए औना-पथारी मे ॥ भाइ रे....

गुन-धुन मे जखन-तखन
इएह बात सोचै छी
चिन्ता मे क्षुब्ध भेल
माथ अपन नोचै छी
भाइ ! कटैछी जिनगी खुमारी मे ॥ भाइ रे....



तोरा की पता जे—

तोरा बिना कोना हम रहै छी
मोन केर बात ई मोने रखै छी
तोरा को पता जे—
कोना हम जिबै छी ?

अपन मोनक हरियर कागत पर
लीखल तोरहि नाम
एको पल विश्राम करै छी
जाक' ओही ठाम

मात्र ओहीठाम कने छाहरि देखै छी
ओहीठाँ जाक' हँसै छी-गबै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?…

मोन पड़ैत' छि ओ दिन प्रियतम
तोरा संग जे बीतल
मोने अछि बिछुड़नक घड़ी
आ आँखिक पिपनी तीतल

नोरे टा पीबिक' हमहूँ रहै छी
नोरे मे डूबल ई जिनगी देखै छी
तोरा को पता जे—
कोना हम जिबै छी ?…

तोरे स्नेह-शिखा पर अर्पित
कएने छी हम अपनाकेँ
मन-मन्दिर मे पूजि रहल छी
तोरे प्रेमक प्रतिमाकेँ

प्रतीक्षाक उपवन सँ कुसुमो अनै छी
मोनकेर वेदना सँ प्रतिमा पूजै छी

तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?…

ताकि रहल छी तोरा सदिखन
विसरल गीतक पाँती मे
टूटल निन्नक सपना मे
आ जरल प्रेमकेर बाती मे

घूरिकऽ अतीत सँ हम चल अबै छी
स्मृतिक दर्द मे तोरा पबै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?…

कथमपि टूटि सकैछ ने कहियो
निर्मल प्रेमक डोरी
जै डोरी मे युग-युग सँ अछि
बान्हल चान-चकोरी

हृदयक गगन के तोरे चन्ना बुझै छी
अपनाकेँ तेँ हम चकोर कहै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?…

कतेक जतन सँ लीखि सकल छी
तोरा दू टा आखर
उत्तर दीहें जुनि बनबिहें
अपन हृदयकेँ पाथर

ई जुनि लिखिहें जे हमहूँ कनै छी
लिखिहें जे सदिखन हँसिते रहै छी
तोरे खुशीक कामना हम करै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?…

बाबू रे बाबू

माए केर मुँह मे बाबू रे बाबू
बहिनिक मुँह मे भैया यौ।
बेर-बेर पूछै छथि कनियाँ
घेलियै कतऽ रुपैया यौ ॥ माए केर...

भ' अति चिन्तित माए पुछैत' छि
बौआ, बड़ दुबरायल लगै छ'
सभटा झंझटि हटबे करतै
एत्ते किए' घबड़ायल लगै छ'

हरथुन सभ दुख भोला दानी
हरथुन कृष्ण-कन्हैया हौ ॥ माए केर...

घटले रहइन हिनका सभ दिन
साबुन तेल आ' चोटी
कखनो जा कऽ बैग तकै छथि
ताकि अबै छथि जेबी

भ' निराश माछी सन भन-भन
करइछ बिढ़नी - दैया यौ ॥ माए केर...

तैखन बुचिया 'माँ माँ!' बाजल
लोहछलि 'माँ' दू चाट लगाओल
सासु बेचारी जँ किछु बाजलि
सभ बिक्ख ओकरे पर झाड़ल

हम गुम्म छी—सोचि रहल छी
आयल केहन समैया यौ ॥ माए केर...

भानस छोड़ि क' भगली कनियाँ
ठोकि केबाड़ खाट ध' लेलनि
भ' उदास माए हारि-थाकि कऽ
भनसा-घर केर बाट पकड़लनि

भानस बनल कियो नै खेलक
खा गेल सभ बिलैया यौ ॥ माए केर...

मोन पड़ैतछि हिनकर चिट्ठी
लिखलनि जे 'श्री प्राणनाथ जी
एना किए' हमरा बिसरल छी'
से पढ़लौं आ इहो देखै छी

पति-पत्नी केर बीच आबि क'
सौतिन बनल रुपैया यौ ॥ माए केर...

भारी संकट मे पड़ि गेलौं
एक दिस घर आ एक दिस कनियाँ
तीत-मिट्ठ अनुभव करइत छी
माए केर ममता, बहु केर दुनियाँ

सोचि रहल छी एना कते दिन
चलतै जीवन - नैया यौ ॥ माए केर...



तोरा की पता जे—

तोरा बिना कोना हम रहै छी
मोन केर बात ई मोने रखै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?

अपन मोनक हरियर कागत पर
लीखल तोरहि नाम
एको पल विश्राम करै छी
जाक' ओही ठाम

मात्र ओहीठाम कने छाहरि देखै छी
ओहीठाँ जाक' हँसै छी-गबै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ?···

मोन पड़ैत' छि ओ दिन प्रियतम
तोरा संग जे बीतल
मोने अछि बिछुड़नक घड़ी
आ आँखिक पिपनी तीतल

नोरे टा पीबिक' हमहूँ रहै छी
नोरे मे डूबल ई जिनगी देखै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ? ···

तोरे स्नेह-शिखा पर अर्पित
कएने छी हम अपनाके
मन-मन्दिर मे पूजि रहल छी
तोरे प्रेमक प्रतिमाके

प्रतीक्षाक उपवन सँ कुसुमो अनै छी
मोनकेर वेदना सँ प्रतिमा पुजै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ? ···

ताकि रहल छी तोरा सदिखन
विसरल गीतक पाँती मे
टूटल निन्नक सपना मे
आ जरल प्रेमकेर बाती मे

घूरिकऽ अतीत सँ हम चल अबै छी
स्मृतिक दर्द मे तोरा पबै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ? ···

कथमपि टूटि सकैछ ने कहियो
निर्मल प्रेमक डोरी
जे डोरी मे युग-युग सँ अछि
बान्हल चान-चकोरी

हृदयक गगन के तोरे चन्ना बुझै छी
अपनाकेँ तेँ हम चकोर कहै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ? ···

कतेक जतन सँ लीखि सकल छी
तोरा दू टा आखर
उत्तर दीहें जुनि बनबिहें
अपन हृदयकेँ पाथर

ई जुनि लिखिहें जे हमहूँ कनै छी
लिखिहें जे सदिखन हँसिते रहै छी
तोरे खुशीक कामना हम करै छी
तोरा की पता जे—
कोना हम जिबै छी ? ···

हम देश केर सिपाही

हम देश केर सिपाही
हम एक बात जानी
अइ देश केर पूत हम
थिक नाम हिन्दुस्तानी ॥ हम देश केर·····

मरिए क' भेटय अमृत तँ
पीबिए क' की करब
गुलाम भैए जैब तँ
जीविए क' की करब
लुटा ने सकै छी
सुभाषक निशानी ॥ हम देश केर·····

हमरा ले' ऐ धरतीक आगाँ
स्वर्गो एकदम्म तुच्छ अछि
हमरा ले' आजादीक आगाँ
जिनगी एकदम्म तुच्छ अछि
बिसरि नै सकै छी
बियालिस केर पिहानी ॥ हम देश केर·····

अछि स्वतंत्रता हमर
सपनाक ओ सरोवर
जाहि मे हो देशक
कते रत्न केर धरोहर
से गमा नै सकै छी
राखि क' हम जुआनी ॥ हम देश केर·····

खूनक एकोटा कतरा
जाधरि शरीर मे रहत
फहराइत तिरंगा के
कियो झुका नै सकत
सहि नै सकै छी
हम ककरो शैतानी ॥ हम देश केर·····

आँखि देखयबाक उत्तर
टाकु भोंकि क' देबै
डेग बढयबाक उत्तर
घेँट छोपि क' देबै
चिकरि क' कहै छी
चाहे मानी ने मानी ॥ हम देश केर·····

●●●

गौरी कोना क' रहती

छोटे-मोटे टूटल मड़ैया मे गौरी कोना क' रहतो हे ? ...

गौरी हमर
छथि बड़ सहलोला
कोनाक'
पिसती भाङक गोला

हाथो मे पड़तनि लोढ़ीक ठेला, कोना क' सहती हे ? ...

शिवजीकेँ धुर दुइ
भाङेक बाड़ी
बीतो करथि नहि
खेती-पथारी

धीया-पूता केर पेटक बखारी, कोना क' भरती हे ? ...

अपने महादेव
भेला मसानी
बसहाकेँ के देत
गूड़ा आ सानी

भूत-परेतक डरेँ भवानी, दूरे पड़ेती हे ॥ ...

कहथि 'अनिल'
सुनु-सुनु हे मनाइनि
धीया अहाँकेर
छथि जगतारणि

जनिक संग मे त्रिभुवनदानी, तनिका कथीक दुख हे ?
छोटे-मोटे टूटल मड़ैयो मे गौरी सभ सुख पओती हे ॥ ...



मैथिली साहित्यमे विद्यापतिसँ चल अबैत ई गीति-काव्य-धारा आइयो धरि अबाध गतिसँ प्रवहमान अछि। गतिमे, गंभीरतामे अथवा व्यापकतामे ई धारा भारतीय वाङ्मयक कोनो साहित्यसँ पछुआयल नहि अछि।

'तोरा अङनामे' गीति-काव्यक एक उत्कृष्ट संग्रह अछि जाहिमे 'अनिल'जी गीति-काव्यक मूल तत्त्व—वैयक्तिकता, संक्षिप्तता, भाव-एकता, संगीतात्मकता ओ सशक्त अभिव्यंजना-कौशलक सम्यक् परिपाक कयलनि अछि। 'माँ शारदे' आ 'जय माँ संतोषी'मे कविक स्वानुभूति स्पष्ट रूपसँ देखबामे अबैत अछि। 'अइ माटिकेँ प्रणाम' आदि किछु एहनो रचना अछि जाहिमे कवि आत्मानुभूतिकेँ व्यक्त नहि कऽ सकलाह अछि, तथापि एहिमे कविक भावोन्माद एतेक तीव्र भऽ उठल अछि जे व्यक्तित्वक स्पष्ट अभावोमे कविक मर्म प्रकट भऽ जाइत छनि।

गीति कोनो विशिष्ट मनोदशाक उच्छ्लन भेल करैत अछि। ओ जीवनक ओहि महत्त्वपूर्ण क्षणक रचना होइत अछि जखन कोनो तीव्र आवेशसँ कविक चेतना अन्तर्मुखी भऽ उठैत छैक। आ, अन्तर्मुखी चेतना बहुत क्षणिक होइत छैक। यैह क्षणिक चेतना थिक 'संक्षिप्तता'। 'तोरा अङनामे'क प्रत्येक रचनाक अनुशीलनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे 'अनिल'जी सर्वत्र छोट-छोट पदमे भावक गुंफन कयने छथि। 'देखि तोरा लगैए', अहाँ नील गगनकेर चन्दा', 'मोन होइए' आदि पद भाव-गुंफित अछि, संगहि छोटो।

गीति-काव्यक तेसर आवश्यक तत्त्व अछि भाव-एकता। गीति-काव्यक लेल ई आवश्यक छैक जे आदिसँ लऽकऽ अन्त धरि ओ एके भावसँ अनुस्यूत हो। ओहि रचनाक विभिन्न पंक्ति मूलतः एके भावसँ सम्बद्ध रहबाक चाही। अनिलजीक प्रत्येक रचनामे सर्वत्र एके भाव अथवा जीवनक कोनो एके भावनात्मक स्थितिक अंकन कयल गेल अछि। 'आधा अंगक मालिक छी अहीँ', 'ई जुनि पूछू' आ 'से फगुआ खेलायत कोना कऽ' भाव-एकताक सशक्त उदाहरण थिक।

संगीतात्मकता गीति-काव्यक चारिम ओ अति महत्त्वपूर्ण उपादान थिक। एहि संकलनक सब गीत संगीतात्मक अछि—लय, तालमे आबद्ध। ई गीत सब बहुत कम समयमे मिथिलांचलक जनकण्ठमे बसि गेल अछि। लोककण्ठमे लोक-गीतक रूप लऽ लेलक अछि। गेयत्वक दृष्टिसँ एहि संकलनक सब गीत अति सफल अछि। मात्र सांगीतिकता अछि से बात नहि, ओहिमे अनुभूतिक सुन्दर सामंजस्यो छैक। अनुभूतिक तीव्रता कविताकेँ स्वयमेव संगीतात्मक बना दैत छैक।

'तोरा अङनामे' गीति-काव्यक प्रणयनसँ अनिलजी सामाजिक, आर्थिक ओ राजनीतिक स्थितिक प्रतिबिम्बन जाहि यथार्थ अनुभवक संग कयलनि अछि, से प्रशंसनीय। हमरा अशा अछि, सुधी समाजमे 'तोरा अङनामे' समुचित आदर पाओत।

पटना
२२-११-१९७८ —छत्रानन्द

'तोरा अङनामे'—हम

हमर बहुत रास गीत-रचना हमर मित्र श्री शशिकान्तजी सुधाकान्त जी आकाशवाणी आ चेतना समिति आ मैथिली साहित्यक विभिन्न मंचसँ अपने सभकेँ सुनबैत आबि रहल छथि। अपन किछु रचना अपनेकेँ सुनयबाक किंचित अवसर हमरहु आकाशवाणीसँ आ किछु साहित्यिक मंचसँ भेटल अछि। अपने सभ हमर रचनाकेँ पसिन्न कए हमरा प्रोत्साहित केलहुँ अछि, हमरा लेल एहिसँ वेशी प्रसन्नताक बात आर की भ' सकैछ? आ, तकर प्रमाण थिक यैह जे "तोरा अङना मे" अपनेक हाथमे अछि।

सर्व श्री बी० के० चौधरी (स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, लोकल हेड ऑफिस पटना) सँ जे प्रोत्साहन, प्रसिद्ध आधुनिक कवि भाइ भीमनाथ जी सँ जे सहयोग, सभहक प्रिय बटुक भाइ माने मैथिली साहित्यक व्यंग्य कथाकार श्री छत्रानन्द जीसँ जे स्नेह आ हास्यसम्राट् श्री हरिमोहन बाबू सँ जे आशीर्वाद भेटल अछि तकरा शब्देँ व्यक्त करबाक सामर्थ्य हमरा मे नै अछि।

हमर टटका मित्र डा० श्री हेमचन्द्र लाल कर्ण (चतरा, मधुबनी) आ श्री कृष्णचन्द्र झा एम० ए० (डुमरा, मधुबनी) पोथी प्रकाशनक लेल जिद्द ठानि देलनि आ मुरलीधर प्रेसक व्यवस्थापक श्री देवेन्द्र झा जी एतेक कम समयमे एतेक तत्परता देखाए मुद्रण करौलैन्ह। हिनका लोकनिकेँ कोन शब्देँ धन्यवाद दियनु?

साहित्य-सृजनक लेल पूज्यवर बाबूजी आ मामाजी (श्री देवेन्द्र कुमर, हाइ स्कूल, रहिका, मधुबनी) सँ जे प्रोत्साहन आ सुझाव भेटैत रहल अछि हम तदर्थ नतमस्तक छी।

अपन सहकर्मी श्री बद्री प्रसाद शर्मा (मुजफ्फरपुर) आ श्री कन्हैया लाल श्रीवास्तवकेँ कोना बिसरि सकबैन्ह जे सतत साहित्यिक-वातावरण बनाक' रखबामे सहयोग दैत रहलाह अछि?

आब अहीं कहू जे एहन स्थिति मे हम अपना विषय मे किछु लिखिक' अपनेक बहुमूल्य समय किएक जियान करू? इ तँ अपने कहि सकैत छी, सोचि सकैत छी आ सूचित क' सकैत छी जे 'तोरा अङना मे' की अछि? कोना अछि? किएक अछि?

हम तँ एतबे कहब जे—

ने कवि छी हम ने गीतकार
ने आलोचक ने लेखक छी।
मानी तँ मानू, अपनहि सन
माँ मैथिलीक पद-सेवक छी॥

जय मैथिली!

तिथि २३ नवम्बर १९७८ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'